ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 11, Issue 5, September - October 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 |

वैदिक परम्परा में नारी सशक्तिकरण

रमेश कुमार सोनी[1] डॉ. बलबीर सिंह[2]

शोधार्थी, अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाँडनू[1]

सह–आचार्य, अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाँडनू[2]

सारांश

वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महिलाएं अपनी रचनात्मक, कलात्मक और सजूनशीलता से पुरुषों को पूर्णता प्रदान करती आ रही है। महिलाओं कि जब भी हम चर्चा करते है तो प्रेम, स्नेह व मातृत्व के साथ ही शक्ति सम्पन्न स्त्री की मूर्ति सामने आती है। शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पुजा होती है वहां सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है। समाज और शास्त्रों ने नारी को कई स्वरूपों में दिखाया है। प्रथम वह रूप है जिसमें उसे देवी मानकर पुजा जाता है। नारी का दूसरा रूप जिसमें उसे वर्तमान समय में सर्वश्रेष्ठ भूमिका में दिखाया गया है। यह एक ऐसा रूप है जिसमें आधुनिक महिला समाज के लिए एक आदर्श है। यह एक माँ, बहन, पत्नी एवं बेटी सभी रूपों में सफल है। यह वह रूप है जिसमें आधुनिक नारी घर में सभी भूमिकाओं का सफलता से निर्वाह करती है। सृष्टि रचियता, ब्रह्मा के बाद सृष्टि सृजन में यदि किसी का योगदान है तो वो नारी का है। सहनशीलता, कर्तव्यपरायणता की प्रतीक एवं कर्मक्षेत्र में योद्धा की भांति लड़ने वाली आधुनिक महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है और परिवार की आर्थिक समृद्धि में भी अपना भरपूर योगदान दे रही है।

देश की महिलाओं ने आसमान से लेकर सरहद तक, घर से लेकर मल्टीनेशनल कम्पनियों तक देश का परचम लहराया है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहा भारतीय महिलाओं के कदम आगे न बढ़ रहे हों। भारत में अब महिलाएं आर्मी, एयरफोर्स, पुलिस, आई.टी.. इंजिनियरिंग, मेडिकल जैसों क्षेत्रों में अपनी सेवाएं देश को दे रही है। सही मायने में महिला तब ही सार्थक रूप से सशक्त होगी जब उसको मानसिक व शारीरिक रूप से सम्पूर्ण आजादी मिलेगी। प्रताड़ना और कन्या भ्रूण हत्या नहीं की जाएगी। प्रस्तुत शोध आलेख में महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुये वैदिक काल में महिला सशक्तिकरण के स्तर का विस्तृत वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : भारतीय संस्कृति, वैदिक काल, आधुनिक महिला, महिला सशक्तिकरण

परिचय :

महिला सशक्तिकरण को बहुत आसान शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं। जब महिलाएं स्वयं से जुड़े हर फैसले स्वयं लेती है। यही स्थिति महिला सशक्तिकरण है। अर्थात निर्णय क्षमता का विकास करना ही महिला सशक्तिकरण का मूल भाव है। इससे महिलाओं को अधिकार और स्वाभिमान को प्राप्त करके सक्षम बनने का अवसर मिलता है और महिलाएं सशक्त होती हैं।

भारत में महिलाओं की स्थिति :

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपने चरम पर थी और उन्हें घर परिवार व समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। महिला अपराध जैसी कोई चीज उस समय अस्तित्व में नहीं थी। धीरे धीरे महिलाओं की स्थिति में क्षरण प्रारंभ हुआ और इसके साथ ही शुरू हुई महिला के खिलाफ अपराधिक प्रवृति।

मध्यकाल में उनके खिलाफ होने वाले अपराधों की गंभीरता काफी बढ़ गई थी। युद्ध में सोने–चांदी के साथ महिलाओं को भी लूटा जाने लगा। मध्यकाल की वही बर्बर प्रवृति आज भी कायम है। महिला अपराधों की प्रवृति जरूर बदली है लेकिन कमोबेश समाज की प्रवृति वही है।

भारत में पिछले एक दशक से सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ी है। हालांकि कार्यक्षेत्र पर भेदभाव और पुरूष वर्चस्व की मानसिकता के कारण भारतीय महिलाओं को कई प्रकार की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। हाल ही में हुए एक वैश्विक सर्वे में एक बार फिर यह बात सामने आई है। हर चार में से एक भारतीय पुरूष का मानना है कि महिलाओं को घर से बाहर काम करने के लिए नहीं जाना चाहिए।

भारत में शहरी इलाकों में रहने वाली महिलाओं में असुरक्षा की भावना इस कदर बढ़ गई है कि वे तब तक घरों से नहीं निकलती जब तक कि बहुत जरूरी न हो। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के टी.यू.एस. (टाइम यूज सर्वे) के मुताबिक भारत के शहरों में 53 प्रतिशत यानी आधी से ज्यादा महिलाएं अपने घरो से रोज बाहर नहीं निकलती, जबकि 14 प्रतिशत पुरुषों के साथ ही ऐसा है।

आई.आई.टी. दिल्ली के प्रोफेसर राहुल गोयल टाइम यूज के आधार पर महिलाओं और पुरुषों के जीवन में अंतर पर शोध कर रहे हैं। वे कहते हैं कि बचपन से ही लड़कियों को बाहर भेजने से परिवार वाले बचते हैं। वे बताते हैं 25 से 44 साल कि महिलाएं रोज औसतन साढ़े आठ घंटे अवैतनिक घरेलू काम करती है। जबकि पुरुष औसतन सिर्फ 1 घंटा। यह भी एक वजह है कि महिलाएं घरों में कैद हो गई है। इस उम्र के 88 प्रतिशत पुरुष रोज घर से बारह निकलते हैं। वहीं सिर्फ 33 प्रतिशत शहरी महिलाएं ही रोज घर से बाहर निकल पाती है। शादी के बाद महिलाओं के बाहर निकलने के मौके कम हो जाते हैं, जबकि पुरुषों के बढ़ जाते हैं।

अशोका युनिवर्सिटी की प्रोफेसर अश्विनी देशपांडे कहती हैं कि पुणे शहर में महिलाओं का घर से बाहर जाना पुरुषों के बराबर ही है जबकि वर्कफोर्स में उनकी हिस्सेदारी यहां भी बहुत ज्यादा नहीं है। ये कहती है मोबोलिटी के आधार पर भारत में सिर्फ गोवा में ही लैंगिक समानता है।

वैदिक काल में महिलाएं :

ऋग्वेद विश्व के पुस्तकालय का ईश्वर प्रदत प्रथम श्रेष्ठ रत्न है। अतः वैदिक वांगमय में नारी की स्थिति को सम्यक एवं यथारूप में जानने के लिए प्रथमतया इसी पवित्र ग्रंथ का अध्ययन अत्यावश्यक है। उसी के अनुशीलन के साक्ष्यों के आधार पर उस समय नारी की स्थिति का परिचय सही रूप में प्राप्त किया जा सकता है। भारत वर्ष में हमेशा नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। अगर हम वैदिक परम्परा की बात करते है तो उसमें पुरूष और नारी में कोई भेद दिखाई नहीं देता है। अनेक वैदिक मंत्रों में भावनात्मक दृष्टि से भी नारी का समान रूप से आदर भाव दृष्टि गौचर होता है। वैदिक मनीषियों ने नारी शिक्षा के समान रूप महत्य के साथ–साथ महिलाओं के लिए सभी अन्य क्षेत्रों में भी समानता के अधिकार की बात कही है। नारी के शिक्षा, धर्म, विवाह, राजनीति एवं अन्य सामाजिक कार्यों में भी भाग लेने की पूर्ण स्वतंत्रता की चर्चा वेदों में की गई है। जिसको निम्न उदाहरणों से हम स्पष्ट करेंगे।

अध्ययन अध्यापन के समान अधिकार

- देवा एतस्यामवदन्त पूर्व सप्त ऋषयस्तपसे ये निषेदुः।
- भीमा जाया ब्राह्मास्योपनीता दुर्धा दधाति परमे व्योमन् ।।
  (ऋग्वेद 10/109/41)
- बह्माचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्
  (अर्थवेद 11/5/18)
- अहं केतुरह मूर्धाहमुग्रा निवाचनी
  (ऋग्वेद 10/159/2)

उपरोक्त ऋग्वेद के सुक्त में स्पष्ट उल्लेख है कि कन्या ब्रह्मचार्य पालन करके ही विवाह करें और ज्ञानवती एवं शत्रुनाशिका बने। वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, लीलावती, आत्रेयी एवं अनुसूईया सदृश नारियों का अस्तित्व इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि इस काल में नारियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार प्राप्त था।

विवाह की स्वतंत्रता–

- युवतयो युवानं परिसन्त्यापः (ऋग्वेद 2/35/4)

जैसे नदियां स्वयं समुद्र को प्राप्त होती है। उसी प्रकार कन्याएं भी युवक का वरण करती है।

श्रवण एवं वाचन का अधिकार–

- गुहाचरन्ती मनुषोन न योषा समावती विदायेव संवाक
  (ऋग्वेद 1/167/3)
- आ विदथ मावदासि
  (अर्थववेद 14/21)

अर्थात नारी स्वयं रथ का चयन, उस पर आरोहण कर संस्थाओं में श्रोती एवं वक्त्री के रूप में स्वतंत्रता कि अधिकारिणी है।

राजनीति में समान अधिकार –

- राजा के समान नारीयों की भी राजकार्य में सहभागिता की बात वेदों में प्राप्त होती है।
  (यजुर्वेद 13/18)
- न्याय व्यवस्था में भी नारीयां समान रूप से भाग ले सकती है।
  (यजुर्वेद 13/7)
- ऋग्वेद में 'स्त्रियां ही दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नवला अस्य सेनाः अर्थात स्त्रियों की सेना का उल्लेख भी प्राप्त होता है।
- वैदिक काल में स्त्रियों को वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है।
  (यजुर्वेद 36/2)
- अर्थवेद 11.16.3.18 में उल्लेख है कि लडकियां, लड़कों के समान ब्रह्मचार्य को धारण करके शिक्षा ग्रहण करें।
- वैदिक काल में पुत्रियों को भी पुत्र के समान स्नेह दुलार और सम्मान दिया जाता था।
- वैदिक कन्याएं कृषि कार्य में भी पिता के साथ सहयोग करती थी। अपाला को अपने पिता के खेतों में अच्छी फसल के लिए इन्द्र से याचना करते हुए चित्रित किया गया।
  (ऋग्वेद 8/18/5–3)
- ऋग्वेद में कन्या को उच्च स्थान प्राप्त था जिसके उदाहरण हैं–
  'विसृनृता ददशेदीयते घृतम" ऋग्वेद (1/135/7)

अर्थात जहां घृत बहता है। वहां हर्ष से प्रफुल्लित कुमारी देखी जाती है। वैदिक काल में कन्याओं को शुभ तथा विशेष शक्ति से युक्त माना जाता था।

अतः हम यह कह सकते हैं कि जहां वैदिक युग से नारीयां राष्ट्र का उत्थान करती आ रही है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर 21वीं शताब्दी की नारी ने अपने कर्तव्य, कर्मठता और सजूनशीलता के माध्यम से राष्ट्र का निर्माण और विकास कर रही है।

निष्कर्ष :

किसी भी समाज एवं राष्ट्र की स्थिति को वहां की नारियों की दशा को देखकर आंकी जा सकती है। वैदिक काल में गौरवमयी सतयुगी समाज का श्रेय नारियों की उच्च स्थिति को दिया जा सकता है। वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि तब समाज में स्वतंत्रता और समानता की भावना ओतप्रोत थी गृहकार्य से लेकर कृषि प्रशासन एवं यज्ञ कर्म से लेकर अध्ययन साधना तक कोई भी क्षेत्र उनके विशिष्ट व्यक्तित्व, प्रतिभा एवं कौशल की छाप से उछूते नहीं थे। वे अपनी बहु–आयामी उपलब्धियों के आधार पर अपनी जाति के अन्दर संजीवनी शक्ति का संचार करती थी और अपने समाज व राष्ट्र को सशक्त एवं ऊँचा उठाने में अपना अमूल्य योगदान देती थी। आज वर्तमान समय कि नारी ने वैदिक नारी से प्रेरणा लेकर सांस्कृ तिक पुनरूथान की बेला में पुनः उसी स्वर्णिम इतिहास को दोहरा रही है। नारी जागृति कि यह लहर वर्तमान में 21 वीं सदी में नारी सदी के या नारी सशक्तिकरण के आदर्श को सार्थक साकार करके ही दम लेगी। ऐसा विश्वास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ :

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास (वैदिक खण्ड), डॉ. प्रीति प्रभा गोयल राजस्थानी ग्रंथागार, राजस्थान संस्करण 2016
2. वैदिक साहित्य और संस्कृति (बलदेव उपाध्याय) शारदा संस्थान वाराणसी, 2020
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि चांखम्ला भारती अकादमी, वाराणसी संस्करण, 2017
4. विभिन्न आलेख, राजस्थान पत्रिका एवं दैनिक भास्कर समाचार पत्र

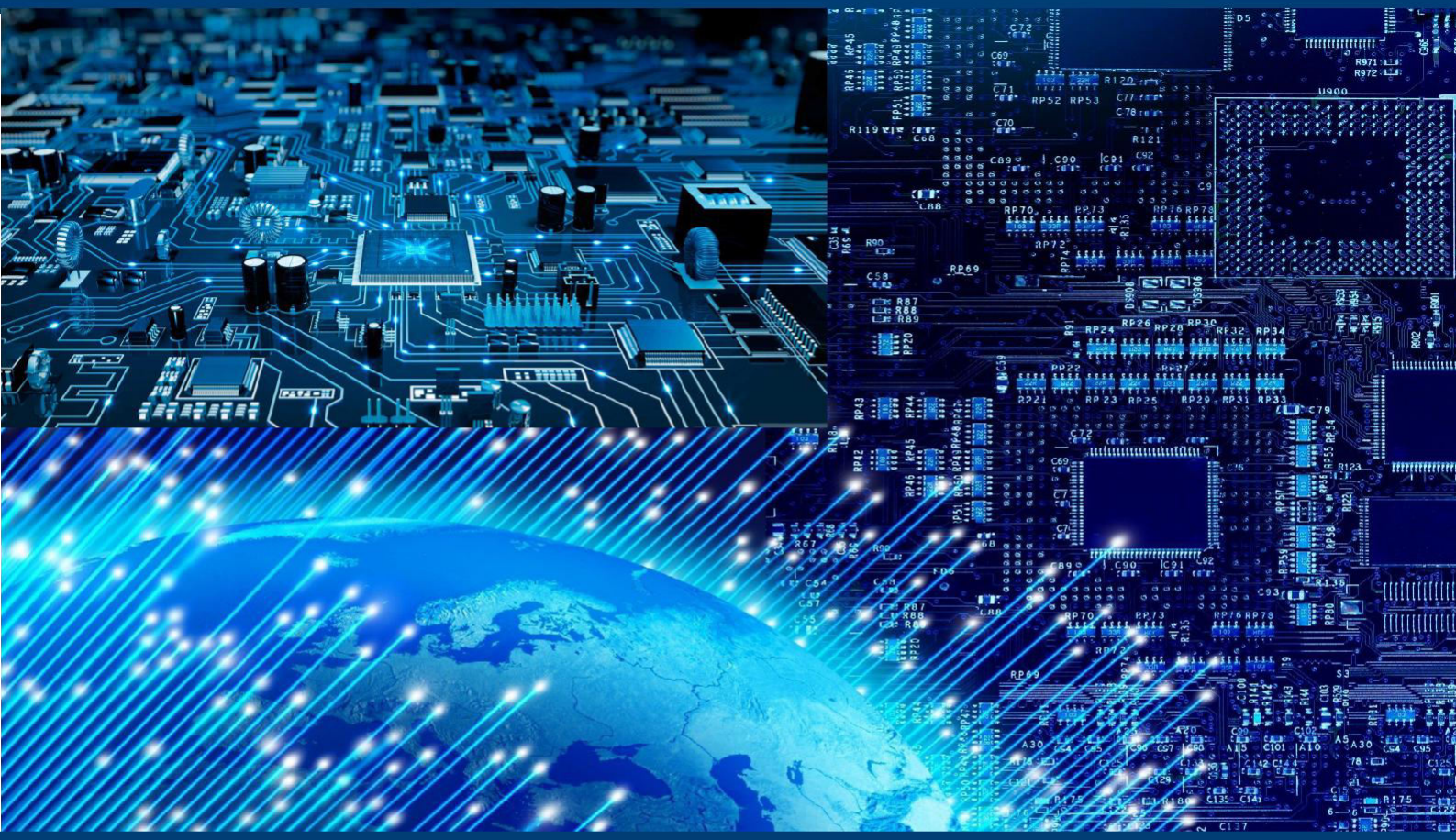

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |